Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग मे हिंदी साहित्य और नैतिकता

डॉ. रत्नमाला धारबा धुळे*
श्री योगानंद स्वामी कला महाविद्यालय वसमत

शोध सार

आज का युग कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)का युग है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनों और कंप्यूटर सिस्टमों को इंसानों की तरह सोचने, सीखने, निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक परिवर्तनकारी तकनीक है, जो मशीनों को इंसानों जैसे समस्या-समाधान कार्य करने मे सक्षम बनाती हैI छवियों (Images) को पहचानने, रचनात्मक सामग्री तैयार करने से लेकर डेटा आधारित भविष्यवाणियाँ करने तक, ए.आई. (AI) व्यवसायों को बड़े पैमाने पर बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। इसमें मशीन लर्निंग (Machine Learning), डीप लर्निंग (Deep Learning), प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (Natural Language Processing) और रोबोटिक्स तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग शिक्षा, बैंकिंग, स्वचालन (Automation), रक्षा और मनोरंजन जैसे अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। हिंदी भाषा में, किसी मशीन की मानवीय मस्तिष्क की तरह सोचने, समझने, तर्क करने, सीखने, समस्याओं का समाधान करने और यहाँ तक कि रचनात्मकता दिखाने की क्षमता को कृत्रिम मेधा या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कहा जाता है। यह एक कंप्यूटर-जनित मेधा है। आज के इंटरनेट युग में कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी ब्लॉग बनाए जा रहे हैं। कंप्यूटर की सहायता से सामग्री का सॉफ्टवेयर-आधारित अनुवाद भी उपलब्ध है। कृत्रिम मेधा के आगमन से आज अनेक कार्य सॉफ्टवेयर की सहायता से किए जा रहे हैं, जिनमें से एक प्रमुख सॉफ्टवेयर मैटलब (MATLAB) है।

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी भाषा, तकनीकी, डिजिटल साहित्य, टूल्स, प्लेटफार्म*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. रत्नमाला धारबा धुळे
Email: ratnamaladhule1971@gmail.com

"हितेन सहितं साहित्यं" — इस उक्ति से साहित्य का भाव स्पष्ट होता है कि साहित्य वही है, जो हित की भावना से संयुक्त हो। यद्यपि मनुष्य और पशु-पक्षी भी हित-चिंतन करते हैं, परंतु उनका हित-चिंतन प्रायः स्वार्थपरक होता है। इसके विपरीत साहित्य का चिंतन विश्वात्मक तथा विश्व-कल्याण की भावना पर आधारित होता है। इस प्रकार साहित्य में समष्टिगत हित-चिंतन प्राप्त होता है — वही सच्चा साहित्य है। 'साहित्य' शब्द में ही वह गरिमा निहित है, जिसमें कविता, नाटक, उपन्यास, गद्य, काव्य, निबंध, आलोचना आदि सभी विधाओं का अस्तित्व सम्मिलित है। नैतिकता का बल पाकर ही साहित्य समाज के कल्याण में सफल हो सकता है। हित का नैतिकता से गहरा संबंध है और हित ही साहित्य का मूल बिंदु है। साहित्य का उपदेश कांता सम्मित होता है तथा उसका उद्देश्य समाज-कल्याण होता है। साहित्य में नैतिकता का अपना एक विशिष्ट स्थान है। नैतिकता एक सामाजिक मूल्य है और साहित्य सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति है। साहित्य मनुष्य के जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। विशुद्ध साहित्य का कर्तव्य है कि वह समाज को जीवन-मूल्यों का निरंतर स्मरण कराता रहे। नैतिकता की नींव डालने का कार्य साहित्यकार करते हैं। वही हमारे अव्यवस्थित तथा विशृंखल मानस में ऐसी मधुर व्यवस्था स्थापित करते हैं, जिसमें सफलता का सुमधुर प्रकाश अंतर्निहित रहता है। श्रेष्ठ अनुभूति से उत्पन्न प्रेरणा ही श्रेष्ठ जीवन का आधार होती है। ऐसी प्रेरणा से ही समाज का हित संभव है। साहित्य में नैतिकता के प्रश्न पर विभिन्न विचारधाराएँ मिलती हैं। एक वर्ग के साहित्यकार साहित्य को जीवन के लिए मानते हैं, जबकि दूसरा वर्ग साहित्य को सौंदर्य एवं मनोरंजन का साधन मानकर उसे नैतिकता से पृथक रखना आवश्यक समझता है। किंतु साहित्य भावनाओं को स्पर्श करता है और नैतिकता को व्यवहार में परिणत करने की क्षमता रखता है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के माध्यम से बड़े साहित्यिक संग्रहों का विश्लेषण किया जा सकता है। शैली, विषय, शब्द-आवृत्ति और कथ्य के आधार पर साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन संभव हो गया है। यह विश्लेषण पाठक को रचना के गुण और अर्थों तक पहुँचने में सहायता करता है। साहित्यिक पाठों

का विश्लेषण आज डिजिटल और तकनीकी साधनों की सहायता से किया जा रहा है, जिससे तुलनात्मक अध्ययन भी संभव हो सका है। साहित्य-सृजन में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अंतर्भाव हो रहा है। आज ए.आई. द्वारा कविता, कहानी और निबंध सृजित किए जा रहे हैं। इनमें मानवीय अनुभूति का अभाव हो सकता है, फिर भी यह साहित्यिक सृजन की नई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। ए.आई. साहित्य-सृजन की प्रक्रिया को अधिक तीव्र और विविधतापूर्ण बनाता है, नए विचारों और रूपों को प्रस्तुत करता है तथा लेखक के लिए सहायक सिद्ध होता है। ए.आई. मानव और तकनीक के सहयोग से विकसित होने वाली साहित्य की एक नई दिशा का संकेत देता है। हिंदी साहित्य का डिजिटलीकरण, पांडुलिपियों का संरक्षण तथा ऑनलाइन अभिलेखागार का निर्माण भी ए.आई. के माध्यम से संभव हो रहा है।

ए.आई. के प्रयोग में यह आवश्यक है कि मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक संदर्भ और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा न हो। साहित्य की आत्मा मानव अनुभव और भावनाओं में निहित होती है, जिसे पूर्णतः तकनीक के माध्यम से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि ए.आई. को मानव सृजनात्मकता का पूरक माना जाए, न कि उसका विकल्प। संतुलित और विचारपूर्वक प्रयोग से ही ए.आई. हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन को समृद्ध और सार्थक बना सकता है।

ए.आई. के माध्यम से भाषा शिक्षण, अनुवाद, पाठ-विश्लेषण, साहित्यिक आलोचना तथा डिजिटल संरक्षण जैसे शैक्षणिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति संभव हुई है। शोध के क्षेत्र में ए.आई. विशाल साहित्यिक डेटा को व्यवस्थित कर नए निष्कर्ष निकालने में सहायक सिद्ध होता है, जिससे अनुसंधान अधिक तर्कसंगत और प्रभावी बनता है। यह साहित्यिक कृतियों की तुलना, विषयगत वर्गीकरण तथा प्रवृत्तिगत विश्लेषण कर सकता है, जिससे अध्ययन को एक वैज्ञानिक आधार प्राप्त होता है। सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से हिंदी भाषा तथा साहित्य व्यापक वर्ग तक पहुँच रहा है। ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में भी डिजिटल माध्यमों से हिंदी साहित्य उपलब्ध हो रहा है। इसके साथ-साथ अनेक चुनौतियाँ और नैतिक प्रश्न भी सामने आए हैं। जहाँ ए.आई. अनेक अवसर प्रदान करता है, वहीं कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है, जैसे—साहित्यिक मौलिकता का प्रश्न, मानवीय संवेदना का अभाव, भाषा की सांस्कृतिक बारीकियों की उपेक्षा तथा बौद्धिक संपदा अधिकार। इन नैतिक प्रश्नों पर गंभीर विचार किया जाना अनिवार्य है। भविष्य में संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी साहित्य का संबंध और अधिक गहरा होगा। मानव और मशीन के संयोग से साहित्य-सृजन, अध्ययन और संरक्षण के नए आयाम विकसित होंगे। ए.आई. हिंदी भाषा को विश्व-भाषा की दिशा में आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निरंतर विकास ने साहित्यिक क्षेत्र में भी नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। परंपरागत रूप से साहित्य को मानवीय अनुभूति, संवेदना और कल्पनाशीलता का क्षेत्र माना जाता रहा है, किंतु आधुनिक तकनीक ने यह सिद्ध कर दिया है कि साहित्यिक अध्ययन, विश्लेषण और सृजन में भी ए.आई. एक प्रभावी सहायक की भूमिका निभा सकता है। भविष्य में ए.आई. और साहित्य का संबंध और अधिक गहरा तथा बहुआयामी होने की संभावना है।

भविष्य में साहित्यिक पाठों के अध्ययन और विश्लेषण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। विशाल साहित्यिक संग्रह का डिजिटल रूप में संरक्षण और उनका त्वरित विश्लेषण ए.आई. के माध्यम से संभव होगा। इससे विभिन्न कालों, आंदोलनों और प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढंग से किया जा सकेगा। साहित्यिक आलोचना को वस्तुनिष्ठता और व्यापकता मिलेगी, जिससे शोध की गुणवत्ता में वृद्धि होगी। साहित्य-सृजन के क्षेत्र में भी ए.आई. भविष्य में नए प्रयोगों को जन्म देगा। मानव लेखक और ए.आई. के सहयोग से नवीन कथानक, प्रतीक, भाषा-शैली और रचनात्मक संरचनाएँ विकसित होंगी। ए.आई. लेखकों को विचार, संदर्भ और भाषिक विकल्प प्रदान कर सृजन-प्रक्रिया को अधिक समृद्ध बनाएगा। यद्यपि साहित्य की आत्मा मानवीय संवेदना में निहित रहेगी, फिर भी ए.आई. रचनात्मकता का एक सहायक उपकरण बनकर उभरेगा। भविष्य में साहित्य का प्रसार और पाठक-वर्ग भी ए.आई. के प्रभाव से विस्तृत होगा। व्यक्तिगत रुचि के अनुसार पाठ-सुझाव, ऑडियो-बुक, अनुवाद और डिजिटल मंचों के माध्यम से साहित्य अधिक सुलभ बनेगा। क्षेत्रीय और लोक-साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहचान मिलेगी, जिससे सांस्कृतिक विविधता को संरक्षण प्राप्त होगा। हालाँकि ए.आई. के बढ़ते प्रभाव से कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न होंगी। साहित्यिक मौलिकता, लेखकत्व और मानवीय अनुभूति से जुड़े प्रश्न भविष्य में अधिक चर्चा का विषय बनेंगे। यदि ए.आई. का साहित्य में अत्यधिक या अनियंत्रित उपयोग किया गया, तो साहित्य के मानवीय पक्ष को क्षति पहुँच सकती है। अतः भविष्य में साहित्य के क्षेत्र में ए.आई. की संभावनाएँ तभी सार्थक होंगी, जब उसका उपयोग संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण से किया जाए। मानव सृजनात्मकता और ए.आई. तकनीक के सहयोग से साहित्य एक नए युग में प्रवेश करेगा, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

के माध्यम से साहित्य-सृजन का कार्य और अधिक विस्तृत होगा। स्वचालित लेखन सॉफ्टवेयर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल और अन्य भाषा मॉडल उपन्यास, कविता, कहानियाँ और लेख लिखने में सक्षम हो रहे हैं। साहित्यिक अनुवाद भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से किया जा रहा है, जिससे सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ कम हो रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग साहित्यिक ग्रंथों के विश्लेषण तथा ऐतिहासिक संदर्भों को समझने में भी किया जा रहा है। उदाहरणस्वरूप, ए.आई. द्वारा शेक्सपियर की शैली में नई कविताएँ रची गई हैं तथा कृत्रिम नैरेशन के माध्यम से कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

साहित्य के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पारंपरिक रचनात्मक प्रक्रियाओं को चुनौती दी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने साहित्य के क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाला है। यह प्रभाव रचनात्मकता, उत्पादन प्रक्रिया और सामग्री की पहुँच के संदर्भ में देखा जा सकता है। इसके कारण रचनात्मक क्षेत्र में रोजगार को लेकर चिंता भी बढ़ी है। स्वचालित लेखन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स कहानी, कविता, निबंध और संवाद लेखन में सक्षम हो गए हैं। कहानी और पटकथा लेखन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता लेखकों को नए विचार देने या संपूर्ण कहानी का मसौदा तैयार करने में सहायता करती है। अनुवाद और संपादन के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषाई बाधाओं को तोड़ते हुए साहित्य का त्वरित और अपेक्षाकृत सटीक अनुवाद कर सकती है। पुस्तक अनुशंसा प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पाठकों की रुचि को समझकर उपयुक्त पुस्तकों की सिफारिश करती है। कहानी और कविता लेखन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल उपन्यास, लघु कहानियाँ और कविताएँ लिखने में सक्षम हैं। ब्लॉग और लेख लेखन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण तेजी से ब्लॉग पोस्ट और लेख तैयार कर सकते हैं। डायनैमिक कंटेंट क्रिएशन के अंतर्गत पाठक की रुचि के अनुसार व्यक्तिगत सामग्री तैयार की जा रही है। उदाहरण के रूप में, ओपन एआई जीपीटी (OpenAI GPT) का उपयोग कहानियाँ और संवाद लिखने में किया जा रहा है। सुडोराईट (Sudowrite) और जैस्पर (Jasper) जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स लेखकों की सहायता कर रहे हैं। अनुवाद के क्षेत्र में गूगल अनुवाद (Google Translate) और डीपएल (DeepL) जैसे उपकरण भाषाई बाधाओं को दूर कर रहे हैं और साहित्यिक अनुवाद संभव बना रहे हैं। संपादन और प्रूफरीडिंग के लिए भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण, जैसे ग्रामरली (Grammarly) और हेमिंग्वे (Hemingway), लेखन की त्रुटियाँ सुधारते हैं। ये उपकरण व्याकरण, वर्तनी और वाक्य-संरचना में सुधार करने में सहायक हैं।

निष्कर्षतः, हम यह कह सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण साहित्य के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रांति आई है। मानव इसकी सहायता से साहित्य के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने साहित्य के पारंपरिक स्वरूप को चुनौती दी है और नए विचारों तथा नई रचनात्मकता को आगे बढ़ाने के अवसर पैदा किए हैं। हालांकि, नैतिकता और मौलिकता से जुड़ी चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग एक सहायक उपकरण के रूप में किया जाना चाहिए, न कि मानवीय सृजनात्मकता के विकल्प के रूप में।

संदर्भ

1. न्यूयॉर्क संयुक्त राज्य अमेरिका संपादित प्रिशा अपडेट किया गया 24 सितंबर 2023

2. वन नेशन वन अप्लिकेशन पर एकीकृत हो रही देश की विधानसभाएं ने सब किया संभव न्यूज 26 मे 2023

3. चतुर्वेदी राम स्वरूप हिंदी साहित्य का इतिहास

4.भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान

5.नामवररसिंह साहित्य की पहचान

6. जैन आर जैन एस आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स अँड लँग्वेज प्रोसेसिंग ओयुफोर्ड युनिव्हर्सिटी प्रेस 2019

7. रसेल एस नार्विन पी आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स ए मॉडर्न अप्रोच पियरसन एज्युकेशन 2021